103 वर्षीय नोबेल विजेता वैज्ञानिक का निधन

नोबेल विजेता वैज्ञानिक रीटा लीवाई-मोन्टेल्विनि (1909-2012) का निधन 30 दिसंबर को हो गया। लीवाई-मोन्टेल्विनी को वर्ष 1986 में चिकित्सा या कार्यिकी का नोबेल पुरस्कार प्रदान किया गया था।

लीवाई-मोन्टेल्विनी एक दबंग वैज्ञानिक कही जा सकती हैं। वे एक यहूदी थीं और इटली में फासिस्ट दमन का शिकार हुई थीं। मुसोलिनी के मेनिफेस्टो ऑफ रेस के लागू होने के बाद इटली में यहूदियों को विश्वविद्यालय में काम करने से प्रतिबंधित कर दिया गया था। मगर उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। अपने बेडरूम को उन्होंने एक चलताऊ प्रयोगशाला में तबदील कर दिया और तंत्रिकाओं की वृद्धि पर अपना अध्ययन जारी रखा।

इसके बाद वे यू.एस. चली गईं और तंत्रिकाओं की वृद्धि पर अपना अनुसंधान कार्य जारी रखा। अंततः वे वह कारक खोज निकालने में सफल रहीं जो तंत्रिकाओं की वृद्धि का संचालन करता है। इसी तंत्रिका वृद्धि कारक की खोज के लिए उन्हें नोबेल से सम्मानित किया गया।

अपने जीवन के अंतिम दो दशक उन्होंने इटली में ही बिताए और वे पूरे देश के लिए एक आदर्श स्वरूप रहीं। उन्हें देश की संसद का आजीवन सदस्य मनोनीत किया गया था जहां वे विज्ञान और वैज्ञानिक शोध की ज़ोरदार वकालत करती रहीं और हर उस विधेयक का विरोध किया जो वैज्ञानिक शोध में रुकावट बन सकता था।

लीवाई-मोन्टेल्विनी ने अफ्रीका में महिलाओं की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए एक प्रतिष्ठान भी स्थापित किया था। इसके अलावा उन्होंने रोम में एक शोध संस्थान की स्थापना की थी जिसे वे एक गतिशील संस्थान के रूप में देखना चाहती थीं। मगर कुप्रबंधन के चलते यह संस्थान आज बहुत अच्छी हालत में नहीं है और अपने अस्तित्व के लिए जूझ रहा है। इसके अलावा, चिकित्सा के क्षेत्र में अपने कई शोध कार्यों के कारण भी वे विवाद में रहीं। ***(स्रोत फीचर्स)***